मासिक—

मानव मन्दिर

संरक्षक :

परम दयाल पं० फ़कीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ३	अगस्त १९७६	संख्या ७

गुरु पूजा

सत्संग हज़ूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होश्यारपुर ।

दिनांक ११ जुलाई १९७६

राधास्वामी ! ऐ मेरे जीवन को बनाने वाले ! मैं संसार में आया । होश आई और तेरी याद आई विचार आया कि मैं कौन हूं और मेरा आद क्या है ? मालिक की तलाश के जज़्बे के कारण मौज मुझे हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई । मैंने उनके रूप में मालिक को माना और प्रेम किया । उन्होंने मुझे नामदान दिया और यह काम दिया । उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि "फ़कीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना ।" मुझे नहीं पता कि मैंने संसार में क्या किया

और क्या कर रहा हूं। आज गुरु पूर्णमा है और आप लोग आये हैं। यह वह दिन है जिस दिन हिन्दु जाति या गुरुमत वाले गुरु के उपकार और दया के बदले गुरु की पूजा करते हैं। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि सच बता फ़कीर ! तुमको गुरुमत से क्या मिला ? जो कुछ मिला वह मैंने कल के सत्संग में बता दिया। मिलना क्या था। अब मेरा परिणाम क्या हो रहा है ? मेरे अन्तर में मेरी "मैं" जो सोचती समझती, विचार करती और अनुभव करती है और उस परमतत्व की तालाश करती है अब वह उस परमतत्व को ढूंडते २ स्वयं ही लोप हो रही है। मगर इस परिणाम को प्राप्त करने की संसारवालों को आवश्यकता नहीं। संसारवाले तो धन धान्य और मान प्रतिष्ठा चाहते हैं। मैं अपने जीवन के अनुभव के आधार पर कहना चाहता हूं कि सन्तमत की शिक्षा सर्व साधारण के लिए नहीं है। जो कुछ किसी को मिला, मिलता है या मिलेगा वह उसके अपने ही कर्म, अपनी ही बासना और अपनी ही नीयत का फल है। मैं अमरीका गया। वहां लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है। उन लोगों द्वारा चमत्कार

सुन सुन कर मेरे कान खड़े हो गये। और देशों में भी और भारत वर्ष में भी हज़ारों लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं मगर मुझे कोई पता नहीं होता। मैं अमरीका से वापिस आया। आने पर मुझे पता लगा कि मेरे मिलने वाले पांच जीव चोला छोड़ गये। श्री देवी चरण मित्तल अडीटर "मनुष्य बनो" मेरे बहुत मित्र थे और मुझसे बहुत प्रेम करते थे वह पूरे हो गये, मेरे पुराने मित्र पण्डित स्वर्गीय वली राम की स्त्री का देहान्त हो गया, मेरे मित्र श्री मंगल सैन तो पहले ही चोला छोड़ गये अब उनकी स्त्री स्वर्गवास हो गई, ठाकुर शंकर सिंह जी सेक्रेट्री राधास्वामी सत्संग हनमकुण्डा का चोला छूट गया और सन्त सेवासिंह जी दिल्ली वाले जो कि सन्त थे और बहुत नेक थे वह भी इस नाशवान संसार से कूच कर गये। आज एक और सरदार गवालियर से आया हुआ है, कहता है कि उसका लड़का ट्रक घटना में मर गया है। उसका फोटो भी साथ लाया हुआ है कहता है कि बाबा जी! उसका क्रिया कर्म करदो ताकि उसकी गति हो जाये।

आजकल का गुरुवाद क्या है। बस नाम ले लो और तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आकर तुमको ले जायेगा। क्योंकि मेरे ज़िम्मे शिक्षा को बदल जाने का कर्तव्य है इसलिए उत्साह से कहता हूं कि यह धोका है, प्रापोगण्डा और सरासर ४२० है। मैं ऐसा क्यों कहता हूं ? मरते समय बहुत से लोग कहते हैं कि बाबा जी आये, घोड़ा लाये, पालकी लाये या हवाई जहाज़ लाये मगर मैं कहीं नहीं जाता और न ही मुझे ऐसी घटनाओं का कोई पता होता है। मैं अपने कर्तव्य को पूरा कर जाना चाहता हूं। इसलिए सच्चाई वर्णन करता हूं और सच्चाई से काम करता हूं। हो सकता है जो कुछ मैंने समझा है वह ग़लत हो। मुझे किसी बात का दावा नहीं। लेकिन ये महात्मा संत, कृपालसिंह, बाबा चरणसिंह और भाई नन्दुसिंह इन्होंने मेरे सामने माना है कि वे नहीं जाते। लेकिन वे पब्लिक में यह बात नहीं कहते।

श्री देवी चरण मित्तल के लड़के ने मुझे बताया कि मरने से बारह दिन पहले से लेकर अन्तिम स्वास तक वह आपके फोटो को देखते रहे और आरती

करते रहे। चोला छोड़ने से दो दिन पहले जब उनकी ज़वान बन्द हो गई थी तब भी वह आपके फोटो को देखते रहे। लेकिन मैं सच कहता हूं कि मुझे कोई पता नहीं। लोगों को विचार दिया गया है कि गुरु जीव के बारे सब कुछ जानता है। मैं अपने आपसे पूछता हूं कि फकीर ! तू गुरु बन गया, भेंट लेता रहा, मान प्रतिष्ठा लेता रहा। सच बता कि क्या तुमको पता था कि देवी चरण तुमको याद कर रहा है ? नहीं। मुझे कोई पता नहीं। तो फिर गुरु मत क्या है ? गुरुमत में बार बार कहा जाता है पूरा गुरु, पूरा गुरु, पूरा गुरु। पूरा गुरु क्या है ? पूर्ण ज्ञान, पूर्ण विवेक, पूरी समझ, भेद और रहस्य। आज गुरु पूर्णमा है और मेरे जिम्मे कर्तव्य है, गुरु ऋण है और मेरे ग्रह भी ऐसे हैं। जिस लगन में मैं पैदा हुआ हूं ज्योतिषि ने बताया था कि आप वह काम करेंगे जो आज तक किसीने नहीं किया। मैं एक दिन शिकागो (अमरीका) गया। वहां बहुत से आदमी मुझे मिलने के लिए आये। उनमें एक आदमी जो कि वहां यूनिव्रसिटी में हस्थ रेखा का प्रोफैसर है, उसने मेरा हाथ देखा और कहा कि आपके हाथ की जो लकीरें हैं, पामिस्टरी

के अनुसार इनका गुण यह है कि आप जिसके सिर पर हाथ रख देगें या जिसको *(Blessing)* अर्शीवाद देंगे उसकी मनोकामनायें पूरी होनी चाहिएं। अब मैं सोचता हूं कि यदि यह ठीक है तो मैं किस बात का अभिमान करूं। यह तो मेरे पिछले जन्म के कर्मों का फल है। इस जन्म के कर्मों का फल नहीं है। क्योंकि यदि इस जन्म के कर्म का फल होता तो ये लकीरें हाथ में नहीं होनी चाहिए थीं। इस जन्म में मैंने क्या किया ? जो किया और जो समझा वह आज गुरु पूर्णमा के दिन कहना चाहता हूं। स्वामी जी महाराज ने अपनी बानी में लिखा है।

कर्म जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ना।

कर्म का फल सब को भोगना पड़ता है और मैं देखता हूं कि भोगा। सर्व साधारण की तो बात ही क्या है जब बड़े बड़े सन्तों पीरों पैग़म्बरों को भी काफी दुख और कष्ट उठाना पड़ा तो मानना पड़ता है कि कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। गुरु क्या शिक्षा देता है कि पिछले जो किये हुये हैं वे तो अवश्य भोगने पड़ेंगे। भविष्य के लिए मत कोई

बुरा कर्म करो वरना जब सन्त भी कर्म के फल से न बच सके तो तुम कैसे बच जाओगे। इसलिए मैंने गुरु पदवी पर आकर हेराफेरी नहीं की। मेरे नाम पर बहुत से चमत्कार ठहराये जाते हैं लेकिन मुझे किसी बात पता नहीं होता। लाभ उन लोगों को होता है जो ध्यान करते हैं। मेरे पास दुखी लोग आते हैं मैं कहता हूं कि जहां भी तुम्हारा विश्वास है उसका ध्यान करो। जिसका ध्यान बन जाता है उसके काम हो जाते हैं। तुम चाहे किसी भी धर्म के हो अपने इष्ट का ध्यान करो। ध्यान से तुम्हारी *Will Power* बढ़ जायेगो और तुम्हारी बासनायें पूरी होती रहेंगी। एक तो आज गुरु पूर्णमा के दिन आपको यह कहना चाहता हूं। लेकिन मैं यह नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो। हमारे ऋषि बहुत बुद्धिमान थे उन्होंने सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिए संसार वालों को कई उपाय बताये। धन को प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी का ध्यान बताया। शक्ति को प्राप्त करने के लिए शेर पर दुर्गा के रूप का ध्यान बताया। श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज ने लड़ाई

करने से पहले दुर्गा की पूजा की और उनको वहां से तलवार मिली, और निर्वाण और ज्ञान के लिए गुरु के रूप का ध्यान बताया इसलिए कहता हूं कि ऐ मानव ! परमार्थ तो एक ओर रहा तुम लोग तो संसार चाहते हो। इसलिए संसार के कारोबार और संसार की वस्तुओं के लिए ध्यान किया करो। यह मुझे गुरुमत से मिला है। ध्यान त्रिकुटि में हो। त्रिकुटि ओं का स्थान है। यह ध्यान ही तुमको ऊपर ले जायेगा और ध्यान ही तुमको नीचे ले आयेगा क्योंकि जिस प्रकार की वासना रखकर तुम ध्यान करोगे वह वासना पूरी होगी। मैंने अपने आदघर जाने की आशा रखी थी। राधास्वामी मत कहता है कि जहां सन्त पहुंचे वहां दूसरे मतमतान्तर नहीं पहुंचे। इन्होंने राम और कृष्ण को काल का अवतार कहा। न पराशर आगे गये और न वसिष्ट। वेदान्त को काल मत कहा और जैन बुद्ध, मुसलमान और सब मत मतान्तर सब का खण्डन किया। मैं जब सन्तमत में आया और इनकी वाणियें पढ़ीं तो मैं रोया करता था कि मैं तो मालिक को ढूंडने निकला था। कहां फंस गया। तो उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग

पर सच्चा होकर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। इस बार अमरीका गया। छः सूबों में घूमा। ३५ हज़ार का सफर हवाई जहाज़, रेल गाड़ी और कार द्वारा किया। ३५ भाषण दिये और बहुत कुछ अपना अनुभव बताया जिसको वहां पढ़े लिखे आदमियों ने बहुत पसन्द किया और *Appreciate* किया। इस लिए कहता हूं कि यदि अपनी उन्नति चाहते हो तो तुम्हारी उन्नति तो तुम्हारे कर्म ने करनी है, राम कृष्ण या किसी मरे हुये गुरु ने नहीं करनी! तुम्हारा बेड़ा तुम्हारे शुभ संकल्प, तुम्हारी नेक नीयत और तुम्हारे नेक कर्म ने पार करना है। गुरु जीव के विचार को शक्ति देते हैं और विश्वास दिला देते हैं और शुभ भावना देते हैं। इसके सिवाय कोई गुरु कुछ नहीं कर सकता। इन गुरुओं ने हम भोले भाले जीवों को अज्ञान में रखकर बहुत लूटा है। अगर मैं गलत हूं तो ये महात्मा मेरे सामने आयें और मुझे पकड़ें कि मैं ग़लत कहता हूं।

सन्त तुलसीदास जी ने कहा है।

कर्म प्रधान विश्व कर राखा, जो जस कीन तैसो फल चाखा।

स्वामी जी महाराज ने कहा है।

कर्म जो-जो करेगा तू, अन्त मे भोगना पड़ना।

कबीर साहिब ने कहा है।

कर्म गति टारे नाहीं टरे।

इन सन्तों ने तो यह कहा लेकिन आज कल के गुरु क्या कहते हैं ? तुम नाम ले लो फिर बेशक तुम कुछ भी करो चाहे शराब पीओ मांस खाओ रंडीवाज़ी करो या धोखा फरेब करो। तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आकर तुमको ले जायेगा। इस पाखण्ड को देख कर मेरी सुरत अनामी धाम से इस फकीर के चोले, में यह कहने के लिए आई है कि ऐ मानव ! तू चक्कर मैं आया हुआ है तुमको सच्चाई का पता नहीं। इन गुरुओं, धर्मों और पंथों ने तुमको सच्चाई वर्णन न करके और अज्ञान में रखकर बहुत लूटा है। मैं तुम लोगों को इस लूट से बचाने के लिए आया हूं। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज विचार शक्ति (*Will power*) के धनी थे लेकिन उनके पिछले कर्मों के कारण उनकी धाम उजड़ गई। लेकिन क्या कर लिया उन्होंने ? क्या धाम को बचा सके ? आप लोग आये हैं और

पैसा भी दिया। मैं आप लोगों को यह बता देना अपना कर्तव्य समझता हूं कि इस भरोसे मत रहना कि तुमने किसी गुरु से नाम लिया हुआ है और तुम तर जाओगे। तुम भूले हुये हो। अपने कर्म को ठीक करो।

क्या कोई ऐसी युक्ति है कि हम इस चक्कर से निकल जायें? बुद्धि मानती है कि हम इस शरीर में रहते हुए मन से निकल कर प्रकाश और शब्द में ठहरने की कोशिश करें तो फिर यदि हमारे अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये तो क्योंकि हमारी सुरत मन के मण्डल से बाहर निकल जायेगी इसलिए मन के मण्डल का सारे का सारा अच्छा और बुरा कर्म तुम पर कोई असर नहीं कर सकेगा। उदाहरण के रूप में देखो कि तुमको शारीरिक और मानसिक कष्ट हैं जब नींद आ जायेगी और गहरी नींद में चले जाओगे तो तुमको कोई कष्ट महसूस नहीं होता। ऐसे ही इस जीवन में अगर तुममें यह शक्ति आ जाये कि तुम चैतन्य होकर जाग्रत अवस्था को भूल सको और प्रकाश और शब्द में जा सको तो तुम्हारे सब पाप समाप्त हो सकते हैं। यही सन्तों का

नाम है अर्थात प्रकाश में और प्रकाश से आगे शब्द में जाना है।

नाम जो रत्ती एक है पाप जो रत्ती हज़ार।
आध रती घट सिंचरे जार करे सब छार।

इसलिए सन्तों ने प्रकाश और शब्द का साधन बताया। बुद्धि मानतो है कि अगर अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये तो हमारे अच्छे और बुरे सब कर्म समाप्त हो जायेंगे और हम बच जायेंगे। मेरी इच्छा है कि अन्त समय पर निकल कर कहीं बाहर जाऊं तो बता सकूं कि मेरा क्या प्ररिणाम हुआ। पता नहीं मैं इसमें सफल हूंगा या नहीं। मैं हूं खोजी हर एक चीज़ की खोज करता हूं। सोचता हूं कि क्या मरने के बाद कोई चीज़ शरीर से निकलेगी? नियमानुसार निकलनी चाहिए। क्योंकि यह शरीर धातुओं से बना हुआ है। वे धातू सब निकल जायेगें। प्रकाश और शब्द भी बाहर से आया हुआ है वह भी निकल जायेगें। लगभग तीन साल पहले Tribune समाचार पत्र में एक लेख छपा था कि स्विटज़रलैंड के एक डाक्टर ने एक आदमी को जो बिलकुल मरने के समीप था। उसका वज़न

किया और मरने के बाद शीघ्र ही उसको तोला तो इक्कीस ग्राम कम हुआ। उसने लिखा कि रूह का वज़न २१ ग्राम है। लेकिन मैं उसके साथ सहमत नहीं हूं। क्यों ? क्योंकि जो चीज़ निकलती है अगर उसमें संसारिक इच्छायें हैं तो इन वासनाओं के कारण सूक्ष्म शरीर भारी होगा और जब वह सूक्ष्म शरीर निकलेगा तो क्योंकि जमीन में (*Gravity*) (कशश) है तो वह कशश उस रूह को अपने दायरे से बाहर नहीं जाने देगी। तो चक्कर से निकलने के लिए क्या करना चाहिए ? स्थूल पदार्थ की चाह को त्यागना पड़ेगा। दुर्गादास और मास्टर मोहन लाल ! सुन लो मैं क्या कह रहा हूं। अगर अन्त समय तक सांसारिक इच्छायें मौजूद रहेंगी तो शरीर छोड़ने के बाद पृथ्वी की कशश रूह को खैंच लेगी और ऊपर नहीं जाने देगी। यदि नेकी और परोपकार की इच्छा है तो वह रूह ऊपर के लोकों में चली जायेगी और यदि कोई भी इच्छा नहीं है तो फिर रूह कहां जायेंगी ? सुनो ! जैसे रौशनी की किरण एक सैंकण्ड में लाखों मील का सफर कर जाती है ऐसे ही हमारी सुरत अपने आप में तुरन्त पहुंच

जायेगी। इसलिए जो आदमी निर्वाण चाहते हैं उनको गुरु निर्वाण देगा। समझो मेरी बात को। अगर आप लोग मेरे पास परमार्थ के लिए आते हैं और रुपया भी खर्च करते हैं तो मैं आपको कहना चाहता हूं कि जीवन में अपने सांसारिक वन्धनों को कम करते जाओ अन्त समय आने पर तुम्हारा कोई बन्धन और कोई इच्छा न रहे। तुमको अमूल्य जन्म मिला है। अगर होश है तो मेरी बात को समझो। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य है इसलिए जो मैंने समझा और और अनुभव किया वह बता दिया। यह अमल करने का सवाल है। धन्य गुरु धन्य गुरु करने से या गुरु को रुपया पैसा देने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा।

मैंने कल के सत्संग में बहुत कुछ कहा। मैं सदा कहा करता हूं कि मैं किसीके अन्तर नहीं जाता। जिसको अन्त समय किसी गुरु का रूप आ जाता है या राम, कृष्ण या किसी देवी देवता का रूप आ जाता है तो क्योंकि वह मन के चक्कर में है इसलिए वह आवागवन के चक्कर से नहीं निकल सकता। मौजूदा गुरुओं को कहना चाहता हूं कि तुमलोग दूसरों को उपदेश करते हो। सचाई वर्णन किया करो

वरना कर्म का फल सबको भोगना पड़ेगा। मैं यहां आया आप लोगों ने मेरी सेवा की। रुपया भी दिया। मैं सोचता हूं इसके बदले आप लोगों को क्या दूं। मैं अमरीका गया वहां से कोई चीज़ नहीं लाया। जो कुछ उन लोगों ने दिया मैंने सब बांट दिया। अपना विस्तर भी वहां दे आया। यह काम जो मैं करता हूं मैं इस काम से सुखी नहीं हूं। इस काम से अहंकार आ जाता है। अगर अज्ञानियों का पैसा खा जाऊंगा तो वह मेरी जान को खा जायेगा। मैं अमरीका में *Dr. I. C. Sharma* के घर खाना खाता रहा उसके लड़के को बीस डालर दे आया। मगर आदमी को किसी बात का अहंकार नहीं करना चाहिए। क्यों ? मैंने बाप के घर की रोटी नहीं खाई क्योंकि वह पोलीस में काम करते थे और रिश्वत खाते थे और मैं अपने आपको बहुत नेक पाक और धर्मात्मा समझता था। लेकिन अब क्या किया ? उनके घरों में रोटी खाता रहा जो मांस तो दरकनार रहा *Beaf* खाते हैं। ऐसा क्यों हुआ ? मेरा अहंकार था और अज्ञान था।

बड़े बड़े हंकारिये नानक गरभ गले।

इस आवागवन के चक्कर से पार जाने के लिए प्रकाश और शब्द का साधन है। प्रकाश और शब्द को पकड़ो ताकि तुम्हारे अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये मगर यह आयेगा तब जब तुमको यह विश्वास हो जायेगा कि तुम्हारे अन्तर में जो रंग रूप भाव विचार और संकल्प प्रकट होते हैं ये हैं नहीं केवल भासते हैं और माया है। आप लोगों की बदौलत मेरी आंख खुली और मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भी जो रंग रूप और शकलें आती हैं यह सब धोका है। मैं आप लोगों को गुरुवाद की ग़लत लूट से बचाना चाहता हूं। यह बिलकुल सच्ची बात है। मैंने चेला बनके देखा और गुरु बनके देखा। लोग आते हैं उनके विश्वास के कारण उनके काम हो जाते हैं और उसका श्रेय (Credit) मुझे मिलता है। मैं किसी को कमज़ार विचार नहीं देता। मेरी सच्चाई के कारण दूसरों के अज्ञान के विश्वास को धक्का लगता है। यह मैं जानता हूं मगर मुझे पहले अपना आप प्यारा है उसके बाद तुम प्यारे हो। अगर मैं सच्चाई वर्णन नहीं करता और परदा रखता हूं तो मैं तो दोषी हूं। सच्चाई वर्णन करने से गुरु

बनने का मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं। ज्ञानदाता समझ कर मुझे आप जो चाहें दे दें· मुझे कोई इन्कार नहीं है लेकिन वह भी आप जो कुछ मुझे देते हो मैं मन्दिर में दे देता हूं अपने पस नहीं रखता। आज गुरु पूर्णमा है। गुरु क्या करता है ?

वारी जाऊं मैं सतगुरु के मेरा किया भरम सब दूर।

गुरु भ्रम दूर करता है। भ्रम क्या है ? चीज़ कुछ है और हम उसको समझते कुछ और हैं जैसे अन्धेरे में रस्सी को सांप समझ लेते हैं। हम दुनियां में आते हैं। असलियत को समझते नहीं। स्वपन को सच मानते हैं। मेरा एक दृश्य ही तो था जिसको सच मानकर मैंने जीवन में क्या कुछ नहीं किया। जितना में हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से प्रेम करता था उतना ही वह मुझे कहते कि फकीर ! तू अभी काल और माया से नहीं निकला। मेरी समझ में यह बात आती नहीं थी लेकिन उन्होंने मुझे यह नहीं कहा कि मैं तेरे अन्तर नहीं जाता वह कहते कि फकीर ! तू ग़लती पर है। में बढ़ै चाव और प्रेम से उनकी आरती करने जाता था। इसलिए अगर आज तुम मेरी आरती करते हो तो मैंने भी की हुई है।

तुम तो नारयल रखके करते हो और मैं सोना और चान्दी रखके किया करता था। मगर जो कुछ मैंने किया था वह मेरी ग़लती थी और मेरा अज्ञान था। धन देने से गुरु नहीं रीझता। यह तो संसार का व्यवहार है जो दोगे वह मिलेगा।

शिष्य को ऐसा चाहिए गुरु को सब कुछ दे।
गुरु को ऐसा चाहिए शिष्य का कुछ न ले।

इसलिए सिवाय चन्द आदमियों के किसी और से मैं कुछ नहीं लेता। रोटी अवश्य खा लेता हूं इसमें शक नहीं। मैं जब हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की आरती करने गया तो वह फरमाते हैं।

चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई।
राह से कुराह भया, भूला भरमाना।
कहां बसे कहां नसे. ठौर न ठिकाना।

वह मुझे फरमाते हैं कि फकीर! तू ग़लत रास्ता पर चल रहा है। अब मैं भी आप लोगों से कहना चाहता हूं कि अगर आरती करने से या रुपये या कपड़े देने से कोई सतलोक जा सकता होता तो सारी दुनियां ही वहां पहुंच जाती। यह नहीं कि मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं या मैं इसके विरुद्ध हूं मगर

सच्चाई बता रहा हूं। जो दोगे वह मिलेगा। यह दुनियां का व्यवहार है और कुदरत का कानून है। सार भेदी और दूसरे सब लोग सुन लो कि पैसा देने से काम नहीं बनेगा। कैसे बनेगा ? सुनो

संगी नाहिं साथी नाहिं, कोई न सहाई।
ताक में हैं चोर डाकू कोई न सहाई।

न कोई संगी है और न कोई साथी है। कोई पांच साल जिया कोई बीस साल जिया या पचास साल जिया। कहां गये हमारे पूर्वज ? सबने यहां से चले जाना है लेकिन हम तो यह सोचते हैं कि हम सदा रहेंगे।

सोया सो पूंजी खोया पूंजी खोय रोया।
फल पाया आप बुरा, जैसा बीज बोया।

हमने क्या पूंजी खोई ? हमारी सबसे बड़ी पूंजी हमारी शान्ति है और हमारा अपना आप है। स्त्री दौलत धर्म पंथ और गुरु सब हमको लूटते हैं और हमको अपनी ओर खींजते हैं। मुझे इस बात की समझ नहीं आती थी। आप लोगों की बदौलत मुझे यह समझ आई। हजूर दाता दयाल जी महाराज तो पता नहीं कहां हैं क्योंकि किसी के पास इस बात का

कोई प्रमाण नहीं है। इस समय आप लोग मेरे सच्चे सत्गुरु हैं क्योंकि आप लोगों से मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ।

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बेगाना।
यहां सब बेगाने बसें, कोई न येगाना।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्यों फकीर! क्या तुमने वह देश देखा है? हां। मगर मुझसे अभी वहां ठहरा नहीं जाता मगर मैंने वह देखा है हजूर दाता दयाल जी महाराज की दया से और आप लोगों को दया से।

गुरु बताबे साध को साध कहें गुरु पूज।
अरस परस के मेल से बूझी बूझ अबूझ।

क्योंकि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मुझे यह विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर भो जो कुछ प्रयट होता है यह है नहीं मगर भासता है तो मैं मन को छोड़ जाता हूं। आगे है प्रकाश और शब्द। लेकिन प्रकाश और शब्द भी मेरा देश नहीं है इसलिए मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह है मेरा देश। जहां न मैं न तू न राम न कृष्ण। वह एक अवस्था है Silence in the beginning

and Silence in the End. मैं वहां से आया हूं। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे बारे में लिखा है।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाके, लेजा गुरु के देसा।

अब मैं महसूस करता हूं कि मैं अनामी धाम से सच्चाई वर्णन करने के लिए ही आया हूं। सच्चाई क्या है? सच्चाई यह है कि ऐ इन्सान! तू ने केवल इसी बात में अपने जीवन को बरबाद कर दिया कि यह मेरा बाप है, यह मेरा भाई है, यह मां है यह बहन है यह मेरी स्त्री है। यह तो सब स्वप्न है। यहां कौन किसी का है?

मैंने अपने ग्रह भी आपको बता दिये और हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने जो कुछ मेरे बारे कहा वह भी बता दिया और जो कुछ मैं कहता हूं उसका प्रमाण भी उनके वचनों से और उनकी बाणी से दे दिया। मैं अपनी नीयत से बिलकुल सच कहता हूं कि मुझे धन देने से या मेरे गुन गाने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा बल्कि मेरी बात पर अमल करने से होगा। धन देने से तुमको धन मिलेगा। यह ठीक है मगर मोक्ष नहीं मिलेगा। मोक्ष के लिए आपको

अपनी सुरत सत्गुरु को देनी पड़ेगी। सत्गुरु है ज्ञान, अनुभव, भेद और सार।

पहले दाता शिष्य भया, जिन तन मन अरपा सीस।
पीछे दाता गुरु भया, जिस नाम दिया वख्शीश।

लोग बात को समझते नहीं। सत्संग में जाकर पूरे ध्यान से सत्गुरु की बाणी को सुनो ताकि तुम तन को भूल जाओ। यह है तन देना। मन का देना क्या है? सत्संग में इतने ध्यान से बाणी को सुनो कि मन किसी दूसरी ओर न जाये और मन में कोई और विचार न आये। सत्संग के बाद सत्संग के बचनों पर विचार करो। अहंभाव को दूर करो। गुरु ने तुमको केवल हदायत करनी है अमल तुमने आप करना है। मिलेगा वही जो तुम्हारे कर्म में है। जब समझ आ जाती है तो आदमी की बुद्धि निश्चयात्मिक हो जाती है। शब्द के बाद जो अनुभव होता है उसका पूरा विश्वास हो जाना ही नाम है। स्वामी जी महाराज ने फरमाया है।

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा।
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

जो लोग केवल शब्द के पीछे ही पड़े रहते हैं वे असफल रहते हैं।

गुरु ने उपदेश दिया और मुझे चिताया।
सन्त पन्थ धार हिये कटे मोह माया।

अब मेरे मोह माया चले गये। किसी का मोह स्त्री के साथ, किसी का मोह पुत्र के साथ और किसी का मोह बाबे फकीर या किसी और गुरु के साथ। क्या फर्क है? आखिर है तो मोह ही। एक गुरु के मरने पर कितने ही आदमी और स्त्रियें आत्म हत्या कर लेती हैं। क्यों? उस गुरु ने जीवों को गुरु का सच्चा रूप नहीं बताया। इसलिए उनकी मौत का ज़िम्मेदार वह गुरु है क्योंकि उसने सच्चाई वर्णन नहीं की और उनको अपने साथ बांध रखा और उनको अज्ञान में रखकर उनसे धन दौलत लेकर अपना डेरा बनाया इसलिए वह गुरु उन लोगों की मोत के जुरम का जिम्मेदार है। कोई बाप के मरने पर रोया कोई बेटे के मरने पर रोया और कोई गूरु के मरने पर रोया। क्या अन्तर है? मैं समय के सन्त सत्गुरु के रूप में आप लोगों को

चिता रहा हूं। ग़लत शिक्षा का परिणाम भी ग़लत होता है। एक बार एक मिलेट्री का इनजीनियर राधास्वामी मत को सौ सौ गाली दे रहा था। वह बाज़ार में एक दुकान पर बैठा था और मैं भी वहीं था। मैंने यह समझा कि यह शायद मुझे देखकर राधास्वामी मत को गाली दे रहा है लेकिन मैं चुप रहा। बाद में मुझे मालूम हुआ कि उसकी स्त्री अपने गुरु के चोला छोड़ने पर आत्म हत्या कर गई। छः सात बच्चे हैं। अब उसको बच्चे सम्भालने में बहुत तक़लीफ है। इसलिए यह गाली दे रहा है।

मैं तुम लोगों को लूटना नहीं चाहता बल्कि तुम लोगों को लूट से बचाना चाहता हूं। जो भी आया उसने तुमको लूटा, सच्चाई ब्यान नहीं की।

लूट पड़ी लूट से. बचा ले धन अपना।
सह न काल कर्म चोट, सोध ले मन अपना।

वह कौन सा धन है जिसको तुमने बचाना है? मन की शान्ति। सब हमारी शान्ति को लूटते हैं।

हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने जब मुझे नाम दान दिया था तो फरमाया था कि अपने रिस्तेदारों और अफसरों को यह सिद्ध कर दो कि

तुम्हारा शरीर और तुम्हारा धन उनका है मगर तुम उनके नहीं हो। उस समय समझ नहीं आई अब पता लगा।

राधास्वामी संत रूप तेरे हैं सहाई।
उनकी ओर ध्यान लगा, ले चरन शरनाई।

वह फरमाते हैं कि फकीर! मेरी बात को समझो। मैं अज्ञानी था और मुझे समझ नहीं आती थी। गुरु क्या करता है? जीव के भ्रम शंकाये और सवाल जबाब दूर करता है मगर जिनको सांसारिक इच्छायें हैं और संसार की चीजों की इच्छा रखते हैं उनके लिए सन्त मत नहीं है। जो संसार के दुखो से तंग आ चुके हैं और इनसे निकलना चाहते हैं उनके लिए नाम है। दूसरों के लिए क्या है? शिव संकल्प अस्तु। विचारों को ठीक रखो। नीयत साफ रखो। अपने बच्चों को पालो। परोपकार करो और अपने धर्म को पालो। दुखियों की सहायता करो। इन गुरुओं ने लाखों को नाम दिया मगर सिवाय कुछ एक आदमियों के शायद ही किसी को कुछ मिला होगा। संसार तो संसार चाहता है मैं नाम किसको दूं? दुनियांदारों के लिए ध्यान योग है। मैं नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो। जिसपर तुम्हारा विश्वास है

या जिससे तुम्हारा प्रेम है उसका ध्यान करो। यह मैं अपना ९० साल का अनुभव बता रहा हूं। मिसमरेज़मवाले भी ध्यान योग से ही अपनी विचार शक्ति को शक्तिशाली बनाते हैं। ये दिवार पर एक काला निशान बना लेते हैं और टिकटिकी बांधकर उसको हर रोज़ देखते हैं। जब वह काला निशान उनको सफेद फूल दिखाई देने लगता है तो उनकी विचार शक्ति बड़ जाती हैं और उनमें सिद्धी शक्ति आ जाती है और वे झपने मामूल (सम्मोहित) से जो इच्छा हो कहलवा लेते हैं। ऐसे ही जो आदमी अपने अन्तर में अपने इष्ट का ध्यान करता है और उसके मस्तिष्क और आंखों पर अपना ध्यान जमाता है उसमें सिद्धी शक्ति आ जाती है। फिर वह जो इच्छा करेगा वह पूरी होगी। मिसमरेज़म वाला क्योंकि बाहर ध्यान करता है, इसलिए उसमें वाहर की शक्ति आती है और जो आदमी अपने अन्तर में अपने इष्ट का ध्यान करता है उसमें अन्तर की शक्ति आ जाती है। लेकिन यदि ध्यान करने वाले के विचार गन्दे हैं तो वह अपना नुकसान कर लेगा मैं इसलिए किसीको नाम नहीं देता। नाम में बहुत शक्ति है। जब

तुम्हारा ध्यान बन जायेगा और विचार शक्ति बलवान हो जायेगी तो तुम अगर स्वार्थ चाहोगे तो स्वार्थ मिलेगा और अगर परमार्थ चाहोगे तो परमार्थ भी मिलेगा। यह कुंजी है। इसलिए किसी पूर्ण गुरु के सत्संग में जाकर उसके वचनों को ध्यान से सुनो और अमल करो। उस गुरु की यह ड्यूटी है। कि वह तुमको असलियत का ज्ञान करादे। लेकिन आज कल के गुरु तो यह कहते हैं कि नाम ले लो तुमको तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आकर सतलोक ले जायेगा। सन्तमत में स्वामी जी महाराज ने या हज़ूर महाराज जी ने कोई ऐसी बात नहीं कही लेकिन बाद में ऐसी मनघढ़त बातें घढ़ी गई हैं कि जिनको सुनकर बुद्धि चकित होती है। अज्ञानी जीवों को फंसाने की कोशिश की गई है। जब ब्राह्मणों का राज था तो उस समय भी ऐसा ही हुआ। मुसलमानों के समय में भी काज़ियों का ज़ोर था और उनके बारे में भी बहुत कुछ कहा गया। बुद्धों और जेनियों के समय में उनका ज़ोर था। अब सन्तों का ज़माना है। किसीने दाड़ी बढ़ा ली और किसी ने जूड़ा रख लिया

लेकिन असलीयत का किसी को कोई पता नहीं।

फूटी आंख विवेक की लखे न सन्त असन्त।
जिसके संग दस-बीस हैं उसका नाम महन्त।

कोई सच्चाई नहीं बताता सब जीवों को फंसाने की कोशिश करते हैं। आज कल का गुरुवाद ठगवाद है। इसलिए मैं अनामी धाम से फकीर के चोले में सच्चाई ब्यान करने के लिए आया हूं। गुरु क्या करता है।

वारि जाऊं मैं सत्गुरु के मेरा किया भ्रम सब दूर।

यह है गुरु का काम कि वह तुमको सच्चाई बता दे कि तुम कौन हो। मैंने क्या समझा ? जबसे मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है ! और उनके नाना प्रकार के काम कर जाता है, लेकिन मैं नहीं होता तो मैं मन के रूप को समझ गया और मन को छोड़ने के लिए विवश हुआ। आगे है प्रकाश और शब्द। प्रकाश को देखता हूं और शब्द को सूनता हूं लेकिन मैं वहां उस चीज की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है ! उसका अन्त नहीं मिलता।

इतना ऊंचा चढ़ जाने के बाद में सोचता हूं। कि क्या मैं कुछ बन गया ? नहीं। कैसे मानूं ? लोग मुझसे प्रसाद ले जाते हैं और राजी हो जाते हैं। लेकिन मैं जब बीमार हो जाता हूं तो डाक्टरों के के पीछे फिरता हूं। मैं न सही। मैंने वड़े २ सन्तों के हाल देखे हैं ! उन्होंने बीमारी के कारण काफी दुःख उठाए अगर वो कुछ बन गए होते तो अपनी बीमारी को दूर कर लेते। किसी के लड़के बदमाश हो गए वो उनको ठीक न कर सके। किसी का स्त्री से या वच्चों से विवाद था उसको दूर न कर सके तो मैंने क्या समझा ? कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं वो मालिक बेअन्त है। उसकी मौज से ही यह टूट जायेगा यहां आकर मुझे शान्ति मिली।

चंद चढ़या कुल आलम मैं देखूं भ्रम दूर।

मेरे भ्रम दूर हो गए और मुझे सत्यता का पता लग गया, इसी चक्कर में मैं भी बहुत दौड़ता रहा। ब्यास के अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ और वह माया के चक्कर में आकर यहां आग या।

हुआ प्रकाश आस गई दूजी उगया निर्मल नूर।
माया मोह तिमर सब नाशा पाआ हाल हजूर।

मोह माया तिमर यानी ये अज्ञान क्या है? माया हमारी बुद्धि यानी अकल है। मोह Attachments यानी बन्धन हैं। सम्बन्ध हैं। मैं रूप रंग और विचारों के साथ बंधा हुआ था। ऐ सतसंगियो! दुःख है! मेरे पास कुछ है नहीं मैं आप अपना शरीर काट कर देने को तैयार हूं। मैंने तुम्हारी बदौलत इस भेद को पाया। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज मुझे बहुत समझाया करते थे। लेकिन बात मेरी समझ में नहीं आती थी। उनकी कृपा से मुझे खुशी और आनन्द मिला जब मैं उनकी बात को न समझ सका तो यह भेद समझाने के लिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था और फरमाया था कि फकीर! तुझ में ९९ अवगुण हो सकते हैं मगर एक सच्चाई है। मेरी आज्ञा मानों तुमको सच्चे सत्गुरु के दर्शन सतसंगियों के रूप में होंगे। आप लोग आए हैं। मैं सच्चे दिल से सतगुरु मानकर आपको नमस्कार करता हूं और चाहता हूं कि देवी चरण की आत्मा! मेरी बहन पं० वलि राम की स्त्री!! ऐ मंगलसेन की स्त्री की आत्मा!!! सरदार सेवा सिंह जी की आत्मा और इस सरदार के लड़के की आत्मा!!!! अगर तुम यहां सूक्ष्म शरीर में कहीं

हो तौ तुमने मेरा सत्संग सुन लिया अब तुम अपने घर वापिस चले जाओ। दुनियां एक ख्वाबो ख्याल है। मैं यही कुछ कर सकता हूं और मेरे पास कुछ नहीं है। मैं आप लोगों को शुभ भावना देता हूं।

आप लोग बाहर से दूर-दूर से आए हैं। ऐ दाता! आपने मुझे निबल अबल अज्ञानी और जगत कल्यान का काम दिया था। ऐ मेरे बनाने वाले! मुझे समझ नहीं आती कि मैं क्या करूं। मैं शुभ भावना देता हूं कि तुम लोग जिस नीयत से मेरे पास आए हो मालिक तुम्हारी इच्छा पूर्ण करे। इसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ नहीं है। जो विधी मैंने आपको बताई है सच्चे वनकर सुबह शाम अकेले वैठकर अपने विचार और विश्वास के अनुसार जिस रूप में तुम उस मालिक को मानते हो अपने आपको उस रूप के सर्पुद किया करो। जहां सच्चाई से अपने आपको उसके सर्पुद किया तो प्रकृति अपने आप तुम्हारी मांग को पूरा करने के लिए सामान पैदा कर देगी। मैं यह दावा तो नहीं करता कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठीक है लेकिन मैं अपने आपको Surrender (सुर्पुद) करता रहता हूं कि ऐ मालिक

मुझे तो कुछ नहीं आता इसलिए अव मुझे ले चल। इन धर्मों के झगड़े ने मुझे उदास कर दिया। सव धर्म एक दूसरे को ग़लत कहते हैं ! मैं कहां जाऊं ?

मैं उस खुदा को नहीं मानता जिसको हिन्दू मुसलमान या दूसरे धर्म मानते हैं। मैं उस खुदा को मानता हूं जो तमाम लोक लोकान्तरों का और सबका मालिक है।

सवको राधास्वामी !

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होश्यारपुर ।

दिनांक १२ जुलाई १९७६

गुरु दाता की छवि पर वलिहारी ।

व्यापक अव्यापक हद बेहद. कहन सुनन से वह न्यारी ।
चरन पताल मध्य गगना पर, दिव्य सीस सोभा भारी ।
रोम रोम कोटिन रवि चन्दा. देव दनुज आज्ञाकारी ।
रूप अरूप स्वरूप अमाया कौन कहे महिमा भारी ।
आखिल ब्रह्मांड रोम एक रहता, निराधार जगदाधारी ।
गुरु का चित्र लखे नहीं कोई, निराकार नहीं साकारी ।
सगुन अगुन अव्यक्त नहीं शारद शेष कहत हारी ।
बुद्धि न बूझे मन नहिं सूझे, बाणी अटकी मझधारी ।
राधास्वामी रूप में दरस मिला जब, सेवक जान प्राण वारी ।

राधास्वामी । गुरु पूर्णमा पर मैंने पहले दो सत्संग दिये हैं और आज यह तीसरा दे रहा हुं । यह हजूर दाता दयाल जी महाराज का शब्द है । इसमें यह फरमाते हैं कि गुरु किसे कहते हैं । आजकल

कोई बाबे फकीर को गुरु मानता है, कोई हज़ूर दाता दयाल जी हाराज को गुरु मानता है और कोई किसी और महापुरुष को गुरु मानता है। अगर मुझे भी वही काम करना होता जो दूसरी जगह पर होता है तो मुझे यह नई दुकान खोलने की क्या आवश्यकता थी। गुरु के रूप को न समझकर जो लोग आपस में गद्दियों के लिए झगड़े करते हैं या मुकद्दमे बाज़ी करते हैं और इस संसार में दुख उठाते हैं। इसको देखते हुये मैंने सच्चाई का डंका बजाया। अमरीका गया। बहुत कुछ कहा और दिल खोल कर सच्चाई वर्णन की और यहां भी कहता रहता हूं। अब अपनी आत्मा से पूछता हूं कि यह जो गुरु का रूप हज़ूर दाता दयाल जो महाराज ने वर्णन किया है क्या तुमको उस रूप के दर्शन हो गये ? अगर हो गये तो फिर उस रूप के दर्शन करने के बाद तुमको क्या मिला और तुम संसार को क्या बताना चाहते हो ? तुमने मानवता मन्दिर बनाया। किस लिए बनाया ? दोस्तो ! उस रूप के मुझे दर्शन तो हो गये मगर उस रूप में मुझसे अभी तक ठहरा नहीं जाता। जब मैं उस रूप के दर्शन कर लेता हूं तो मेरे मस्तिष्क में

ऐसी अवस्था छा जाती है, एक ऐसी Condition या State आ जाती है कि जिसमें न तो दुनियां ही भासती है, न मैंपना और न तूपना रहता है और न ईश्वरपना परमात्मापना और जीवपना रहता है। दुख है कि मुझे उस अवस्था को वर्णन करने के लिए शब्द नहीं मिलते और न ही संसार की कोई ज़बान उसको वर्णन कर सकती है। उसको State of statelessness कहलो या उसको बेहद्दी कह लो। उस अवस्था में ठहरने का नाम ही मेरी समझ में गुरु की छवी है।

गुरु दाता की छवि पर बलिहारी।

बलिहारी क्या है? अपना मैंपना त्याग कर उस अवस्था में चले जाना। अर्थात अपनी शक्ति को या अपने हैपने को खो देना।

व्यापक अव्यापक हद वेहद, कहन सुनन से वह न्यारी।

वह जो असली गुरुतत्व है जो कुछ उसके बारे मैंने समझा है हो सकता है कि वह ग़लत हो मगर वहां तक पहुचाने वाले मुझे आप लोग हैं। आप लोगों के चरणों की वदौलत मैं वहां पहुंचा। जब आप लोगों ने मुझे बताया कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट होकर आपके काम कर जाता

है और मैं नहीं होता और न ही मुझे कोई पता होता है तो मुझे विश्वास हो गया कि मेरे अन्तर में भी जो कुछ प्रकट होता है यह सब माया है। इसलिए मैं मन के झगड़ों को छोड़ कर आगे जाने के लिए विवश हो गया। आगे जाने से भाव विचार संकल्प और आशायें सब समाप्त हो जाते हैं। दया तो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की है मगर आप लोगों के अनुभवों के कारण में उस अवस्था में पहुंचा। अब क्योंकि हज़ूर दाता द ाल जी महाराज तो हैं नहीं। इसलिए इस आयु में मैं आप लोगों को सच्चा सत्गुरु मानता हूं जिनकी बदौलत में असली और सच्चे सत्गुरु को प्राप्त कर सका। गो अभी तक मुझसे वहां ठहरा नहीं जाता लेकिन मुझे यह आशा लगी रहती है कि वहां से फिर वापिस न आऊं।

चरन पताल मध्य गगाना पर, दिव्य सीस सोभा भारी।
रोम रोम कोटिन रवि चन्दा, देव दनुज आज्ञाकारी।

कैसे ? रात को नींद कम आती है। रात गयारह बजे से लेकर तीन बज़े तक उसी अवस्था में था। जब सुरत अपने हैपने को भूलकर उस अवस्था में चली जाती है तो प्रेम की लगन में एक अवस्था बन जाती है या एक Bliss महसूस होती है या यूं समझो

कि मैं उसी का रूप हो जाता हूं। फिर मैं सोचता हूं कि उस अवस्था में जाके क्या तुम किसी को कोई लाभ पहुंचा सकते हो? हां! अगर कोई आदमी उस अवस्था में ठहरा हुआ हो तो उस समय उस के दर्शन करने से या उसकी Radiation लेने से अगर दूसरे आदमी की हालत में परिवर्तन नहीं आता तो जो कुछ किताबों में लिखा है या हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने या दूसरे सन्तों ने कहा है या जो कुछ मैंने अनुभव किया है यह सारे का सारा ग़लत है। क्योंकि यह सारा संसार Radiation का है। हर एक आदमी और हर एक चीज़ में से जैसा वह होता है बैसी ही उस की Radiation निकलती हैं। पोलीस वाले अपने सिधाये हुये कुते को चोर या कातल की कोई चीज़ सुंघा देते हैं, घटना बेशक तीन चार दिन पहले की ही क्यों न हुई हो वह कुत्ता उस Radiation को सूंघता हुआ चोर या कातल तक पहुंच जाता है और पोलीस उसे पकड़ लेती है। तो सिद्ध हुआ कि चोर या कातल जहां जहां से गया उस से निकली हुई धारें वहां मौजूद रही तभी तो वह कुत्ता उनको सूंघता हुआ

चोर तक पहुंचा। हर एक चीज की या हर एक आदमी की Radiation एक दूसरे पर प्रभाव डालती है। काश ! मैं संत हो जाता। अभी तक मैं समयानुसार बदलने वाला संत हो सकता हूं। अभी तक मैं २४ घण्टे वहां उस अवस्था में ठहर नहीं सकता। ऐसी अवस्था में रहने वाला आदमी भी संत होता है। जो आदमी मालिक को मिलने या शान्ति प्राप्त करने की इच्छा से संत के पास बैठता है उसमें तबदीलो आनी चाहिए वरना संतमत की शिक्षा ग़लत है। इस लिए मैं असली जीवन (Practical life) में रहने का यत्न करता रहता हूं मगर अभी तक रह नहीं सकता। इस लिए कहा जाता है कि सन्त की महिमा अपार है। अगर संत की संगत मिली हुई हो तो संस्कार अवश्य उभर आयेगा।

संत डारिया बीज घट धरनी जीव के।
को समरथ जो जार सके उस बीज कों।।

मैं संत बनने का यत्न करता रहता हूं मगर अभी तक मैं शत प्रति शत संत बन नहीं सका।

रुप अरूप स्वरुप अमाया, कौन कहै महिमा भारी।।

जब तक तुम गुरु के रुप को बाबे फकीर की शकल में या किसी और महापुरुष की शकल में देखते हो तो वह तो माया है अमाया नहीं है। जो आदमी गुरु के फोटो के दर्शन करके यह समझते हैं कि यह अमाया है ग़लती पर हैं, वह तो माया है। नागी साहिब। आंखे खोलो। इसी लिए तो संतों ने कहां है,

भक्त उपासिक योगी ज्ञानी इन सब चक्कर खाया।

जो आदमी गुरु के रूप को ही सब कुछ समझता रहेगा वह माया में है। वह जो असली गुरु है उसका रुप तुम खुद हो और तुम अमाया हो शर्त यह कि तुम वहां पहुंच जाओ। जब तुम ध्यान आदि को छोड़कर और तन मन धन से निकल कर उस उपर की अवस्था में जाओगे तब तुम अमाया हो तुम्हारी ज़ात अमाया है। यही हज़ूर दाता दयाल जी माहाराज ने मुझे कहा था।

तू है क्या तू मरकज़े आलम है ऐ मरदे फकीर।
फिर रही है गिरद तेरे दुनियां खुद होकर असीर॥

मैं सब कुछ छोड़कर वहां पहुंच जाता हूं मगर मुझे दुख है कि मैं वहां से फिर वापस आ जाता हूं। ये मेरे प्रालब्द कर्म हैं।

आखिल ब्रह्माड रोम एक रहता. निराधार जगदा धारी।

देखो ! यह सब कुछ माया है ? बिजली में एक E M F होता है और एक करेंट होती है । E M F सदा दायम और कायम है । उसमें से करेंट निकलती है । एक बैटरी से कई कई सरकट निकलते हैं । तो वह जो असली गुरु का रुप है वह हमारी अपनी ही ज़ात है । बह परमतत्व आधार है । बाहर के गुरु का यह कर्तव्य है कि यह जीव को सत्संग कराकर वहां पहुंचा दे । लेकिन आजकल के गुरु तो जीवों से सारा जीवन मत्थे ही टिकवाते रहते हैं अपने पीछे लगा रखते हैं और ऐसी शिक्षा देते हैं कि उनके मरने के बाद जीव उनकी गदिदयों से बन्धे रहते हैं । कोई सचाई नहीं वताता । इनमें से कोई भी मंज़ल पर नहीं पहुंचा । मैं पहुंचा तो हूं मगर अभी तक वहां ठहर नहीं सकता । आज गुरु पूर्णमा के सिलसिले में यह सत्संग दे रहा हूं । मौज से शब्द निकला है । आपलोगों को गुरु का रूप बता रहा हूं ।

गुरू का चित्र लखे नहीं कोई निराकार नहीं साकारी !

गुरु का रूप न निराकार है और न साकार है । निराकार और साकार को तो करेंट बनाती है ।

जीवन करेंट है जो सारे शरीर में काम करती है और E.M.P हस्ती है।

सगुन अगुन अव्यक्त व्यक्त नहीं, शारद शेष कहत हारी।

क्या यह ठीक है ? हां। क्यों ? आज प्राप्तः अभ्यास में कहां था ? उस अवस्था को व्यान नहीं कर सकता। जैसे कोई आदमी काम अंग के स्वाद को व्यान नहीं कर सकता और न ही गुड़ के स्वाद को कोई वर्णन कर सकता है ऐसे ही उस अवस्था को भी वर्णन नहीं किया जा सकता। उस अवस्था को आप state of statelessness कह सकते हैं।

यह करनी का भेद है नाहीं बुद्ध विचार।
कथनी तज करनी करे तब पावे कुछ सार॥

शरीर और मन को छोड़कर उपर जाना करनी है इसके बाद है रहनी। जो बकवास करते हैं वह है कथनी। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाय था।

कथनी बदनी तज मेरे भाई।

कबीर साहिब ने भी कहा।

करनी करे सो पूत हमारा कथनी कहे सो नाती।
रहनी रहे सो गुरु हमारा हम रहनी के साथी॥

कबोर सहिब कहते है कि जो इस अवस्था में रहता है वह हमारा गुरु है। रहनी क्या है ? शारीरिक मानसिक और आत्मिक वोधभानों को छोड़ कर अपने आपमें रहना मगर उस अवस्था को वर्णन करना असम्भव है इसलिए हज़ूर दाता दयाल जी महाराज फरमाते हैं कि जब मूर्ती का ध्यान करते हैं वो वह सगुण रुप है और जब मन से मानते हैं तो वह अगुण रुप है लेकिन इन दोनो का भान रहता है। मगर जब आदमी उस अवस्था में पहुंच जाता है तो शब्द भी गुम हो जाता है। यह सब से ऊंची अवस्था है।

शब्द गुप्त तब रहा अनाम. शब्द प्रगट तब धरया नाम।

वहां से धार आती है और जीवों को चिताती है

बुद्धि न बूझे मन नहीं सूझे बाणी अटकी मंजाधरी।
राधास्वामी रुप में दरस मिला जब सेवक जान प्राण वारो।

अगर बुद्धि से समझो तो भी वर्णन से बाहिर है। जैसे गहरी नींद में कोई पता नहीं होता ऐसे ही उस अवस्था में भी यही दशा होती है। बाहर के गुरु ने जब दर्शन दिया तो उसके भाव और विचार से यह दशा पैदा हो जाती है। जान और प्राण के वार देने

का क्या भाव है ? जब हमारा self अपनी ज़ात में ठहर जाता है तो उसका जीवन कुरवान हो जाता है अर्थात जब सुरत वहां पहुंच जाती है तो उस समय न जान की कोई सुद्ध रहती है और न ही प्राण का ही कोई ध्यान रहता है। अगर किसी ऐसे आदमी की संगत की जाये जो उस अवस्था में रहता है तो आदमी की सुरत ज़्यादा परिश्रम करने के बिना ही वहां पहुंच जाती है और बिसमाध अवस्था आ जाती है। मगर क्योंकि उसने पहले दर्जे पास किये हुये नहीं होते इसलिए वह समझता है कि यह कुछ नहीं है। आवश्यक नहीं कि निचले दर्जे पार किये जायें हमने तो उस अवस्था में जाना है। हम बाणी के जाल में फंसे हुये हैं। ये दर्जे सब के लिये आवश्यक नहीं। ये दर्जे तो आदमी की प्रकृति के अनुसार खुलते हैं लेकिन लक्षपद पर सब पहुंच सकते हैं। अन्तिम अवस्था तो इन सब दर्जों को छोड़ देने के बाद आती है लेकिन हम लोग तो अन्तर ही आवाज़े घंटा शंख मृदग आदि सुनने की इच्छा रखते हैं। अगर गुरू की बात समझ में आजाये तो तुम बिना परिश्रम के ही वहां जा सकते हो। इसलिए पूरे गुरु की तलाश करो। दुनियां ग़ाफिल है।

"गुरु मिले तब काह कमाना"

शर्त यह है कि तुम इस मतलब के लिए जाओ। मगर तुम तो घण्टा शंख सुनना चाहते हो। मैं अब अगर कोशिश करूं भी तो भी मैं निचले दर्जों के शब्द नहीं सुन सकता। क्योंकि मेरे अन्तर संसार की चीजों की इच्छा नहीं हैं। इसलिए जिनको संसार की चीजों की इच्छा है उनके लिए सुमिरन और ध्यान आवश्यक है यह गुरुमत है।

गुरु जो कहे सो हित कर मान।
गुरु जो कहे सो चित धर ध्यान॥

मैंने गुरु की आज्ञा मानी। क्योंकि मेरी समझ में बात बैठती नहीं थी। इसलिए यह भेद और रहस्य समझाने के लिये उन्होंने मुझे यह आज्ञा दी थी। भेद की समझाने के लिए मेरे भाई को और आज्ञा थी और मेरी स्त्री को और आज्ञा थी। पूर्ण गुरु जीव की प्रकृति को देखकर उसे उपदेश करता है। मैंने इन तीन सत्संगों में गुरुपूर्णमा का पूरा रहस्य बतला दिया है।

सब को राधास्वामी

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होश्यारपुर ।

दिनांक 15 जुलाई 1976

साधो सो जन उतरे पारा, जिन मन ते आपा डारा ।।
कोई कहै मैं ज्ञानी रे भाई, कोई कहै मैं त्यागी ।
कोई कहै मैं इन्द्री जीती, अहं सबन को लागी ।।
कोई कहै मैं जोगी रे भाई, कीई कहै मैं भोगी ।
मैं तैं आपा दूर न डारा, कैसे जीवै रोगी ।।
कोई कहै मैं दाता रे भाई, कोई कहै मैं तपस्वी ।
निज तत नाम निश्चय नाहिं जाना, सब माया मैं खपसी ।।
कोई कहै जुगती सब जानौं, कोई कहै मैं रहनी ।
आतम देव से परिचय नाहिं, यह सब झूठो कहनी ।।
कोई कहै धर्म सब साधे, और बरत सब कीन्हा ।
आपा की आंटी नहिं निकसी, करज बहुत सिर लीन्हा ।।
गरब गुमान सब दूरि निवारे, करनी को बल नाहीं ।
कहै कबीर साहिब का बंदा, पहुंचा निज पद माहीं ।।

राधास्वामी। यह शब्द मैंने सुना। इन सन्तों की अनोखी वाणियां पढ़ी। सारी आयु इस खब्त में रहा। किस मंजल पर पहुंचा ? जब तक वाणियों के पीछे फिरता रहा मैं धक्के खाता रहा। जब अपना अनुभव सामने आया तो शान्ति मिली। अपना अनुभव क्या है ? कि मैं कौन हूं। मैं चेतन का एक बुलबुला हूं। मुझे तो यही समझ आई है। क्योंकि मैं किसीके अन्तर नहीं जाता तो मुझे यह विश्वास हो गया कि जो कुछ है यह सब आदमी का अपना विश्वास है।

यह एक सरदार आया हुआ है। यह कहता है कि मैं आपका ध्यान किया करता हूं। एक दिन झगड़ा हो गया और मुझसे एक आदमी मर गया। पोलीस आई और मुझे लेगई। उस डर के कारण मेरा ध्यान बन गया। मुझे नहीं पता कि मैंने क्या ब्यान दिया लेकिन मुकद्मा से मैं बच गया। अब मुझे तो पता नहीं कि वह मेरा ध्यान करता है। और भी लोग जो किसी का ध्यान करते हैं और जब उनका ध्यान बन जाता है तो उनकी मनोकामनायें पूरी हो जाती हैं। अब मैं प्रकाश और शब्द में जाता हूं और वहां उस चीज़ को तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और

शब्द को सुनती है और जब कभी वहां पहुंच जाता हूं तो कुछ होश नहीं रहती । यह मेरा अनुभव है ।

साधो सो जन उतरे पारा, जिन मन से आपा डारा ॥

कबीर साहिब ने मन से क्या आपा डारा यह उनको पता होगा । मैंने क्या समझा ? जब मैं समझ गया कि मैं हूं ही चेतन का बुलबुला तो मेरा आपा तो मर गया । यह मेरी रिसरच खोज ने सिद्ध किया है । किसी भी सन्त ने यह नहीं कहा कि मैं चेतन का बुलबुला हूं या मैं कौन हूं ।

कोई कहै मैं ज्ञानी रे भाई, कोई कहै मैं त्यागी ।
कोई कहै मैं इन्द्री जीती, अहं सबन को लागी ॥

जिसने यह विश्वास कर लिया की मैं हूं ही चेतन का बुलबुला तो फिर वह और क्या बनेगा ? इसलिए मेरा अनुभव ठीक है और मुझे खुशी है । मुझे गुरुमत में आने से यह मिला कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूं ।

कोई कहै मैं जोगी रे भाई, कोई कहै मैं भोगी ।
मैं तैं आपा दूरि न डारा, कैसे जी वै रोगी ॥
कोई कहै मैं दाता रे भाई, कोई कहै मैं तपस्वी ।
निज तत नाम निश्चय नहिं जाना, सब भाया में खपसी ॥

काश ! ये मौजूदा महात्मा और गुरु आपनी रहनी बताते जिससे कि लोगों को खुशी मिलती ! हो सकता है जो कुछ मैंने समझा है वह ग़लत है ? मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं है। निजतत्व क्या है मालिके कुल जो परमतत्व आधार है उसमें गति हुई और बुलबुले बने। सुरत का बुलबुला और है, प्रकाश का और है और मन का बुलबुला और है। जब बुलबुला टूट गया तो वही तत्व बाकी रह जाता है। मुझे तो आपने अनुभव से शान्ति मिली है।

कोई कहै जुगती सब जानौं, कोई कहै में रहनी।
आतम देव से परिचय नाहीं, यह सब झूठो कहनी ॥

मुझे नहीं पता कि आतमदेव का परिचय क्या है सन्तों की बाणियों ने दुनियां को पाग़ल बना दिया। मैंने जो समझा वह गुरुपूर्णमा पर बतला दिया।

कोई कहै धर्म सब साधे, और बरत सब कीन्हा।
आपा की आंटी नहिं निकसी, करज बहुत सिर लीन्हा ॥

आपा की गांठ क्या है ? जब तक मैं कुछ बना हुआ हूं तब तक आपा की गांढ़ है। जब मैं यह समझता हूं कि मैं हूं ही एक बुलबुला तो फिर आपा की गांठ कैसी ?

गरब गुमान सब दूरि निकारे करनी को बल नाहीं ।
कहै कबीर साहिब का बदाँ, पहुंचा निज पद माहीं ॥

करनी की शक्ति नहीं है उसमें मैंपना है । क्या पता निजपद क्या है ? मैं तो यह समझता हूं कि जीवन क्या है ?

लब खुले और बन्द हुए यह राज़े जिन्दगानी है ।

यह मेरी समझ में आया है । दूसरे सन्तों ने क्या समझा यह उनको पता होगा ।

सब को राधास्वामी

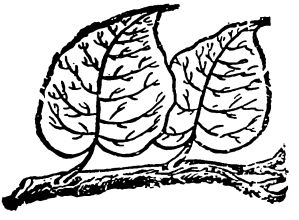

आवागवन

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब (चण्डीगढ़)

आवागमन का सिद्धान्त विल्कुल ठीक है और सत्य सिद्ध हो चुका है। अगर संसार का कोई धर्म इस २० वीं शताब्दी में इस मसला को ठीक नहीं मानता तो यह उसकी हठ धर्मी, होगी। कुछ वर्ष हुए जयपुर विश्व विद्यालय में अपने एक प्रोफैसर साहिब को इस समस्या का पता लगाने के लिए नियुक्त किया। कि वह प्रत्यक्ष प्रमाण ढूंढ़े जिनसे यह सिद्ध हो ए कि आवागवन का सिद्धान्त ठीक सत्य है कि व का जन्म इसके कर्मों के अनुसार फिर इस संसार ोता है। उन्होंने बहुत दृष्टान्त दिये कि एक इ की लड़की ने फिलिपाइन में जन्म लिया और एक ैण्ड के अंग्रेज़ी सिपाही ने दिल्ली में जन्म लिया इन दोनों को अपने पिछले जन्म का पता था और उन्होंने अपने पूर्व जन्म के हालात सही बताये। ऐसे बहुत दृष्टान्त उन्होंने अपने दुनियां के सफर में

मालूम किये जो कि विल्कुल सत्य सिद्ध हुए। मैं इनमें से एक दृष्टान्त आपकी जानकारी के लिए लिख रहा हूं। वह जब अरबस्तान में गए वहां उनके सामने एक लड़का पेश किया गया जिसने अपने पिछले जन्म के हालात बताये। इसका नाम अहमद था। उसने बताया कि वह पिछले जन्म में अमुक गांव में अमुक बाप का लड़का था। एक दिन उसके मित्र ने इसको चाय लाने के लिये कहा। मेरे इन्कार करने पर उसने मेरे मुंह पर छुरा मार दिया और मैं मर गया। जब वह दूसरे गांव में पैदा हुआ तो मैंने अपनी मां को कहा कि मेरा नाम अहमद रखो। मेरा नाम पिछले जन्म मे अहमद था इस बजह से इस पर प्रश्न किये गए जो सत्य निकले। प्रोफैसर हाहिब लिखते हैं कि उन्होंने अहमद पर बहुत प्रश्न किये। किस समय तुम्हें दबाया गया था? इसने जबाब दिया उस समय वर्षा हो रही थी। किसने तुम्हारे छुरा मारा? उसने इसका नाम बता दिया। अपने पहले जन्म के मां और बाप का नाम बताया और उन को पहचान लिया। हैरानी की बात यह थी कि छुरे का निशान उसके चेहरे पर दूसरे जन्म में भी था डाक्टर

जे० एन० सियेनसन बर्जिनया यूनिवरस्टी ने ब्यान दिया है कि इसने ३०० दृष्टान्त दूनियां भर में मालूम किये हैं जिन्होंने अपने पिछले जन्मों के हालात सही वताये ।

मिस्टर बी० पी० सूद कोलैक्टर कोटा के लिखते हैं कि उन्होंने स्वयं खोज की और आठ वर्ष की लड़की सोना का ब्यान विलकुल ठीक पाया कि वह पिछले जन्म में पण्डित वृज मोहन की पत्नी थी और सांप के काटने से मर गई थी ।

मैं भी कई पुनर्जन्म की सचो घटनायें 'इन्सान बनो' मैं लिख चुका हूं । अब प्रश्न पैदा होता है कि क्या आवागमन से छुटकारा मिल सकता है ? अगर मिल सकता है तो कैसे ? हिन्दू शास्त्रों के रचिताओं ने इस विषय पर बहुत रोशनी डाली है । सारा हिन्दू जगत आपने शास्त्रों के अनुकूल चलकर मुक्ति हासिल करने का इच्छुक है । भगबान कृष्ण जी महाराज सबसे उच्चतम, सबसे सरल और पूरा उपाय मुक्ति हासिल रहने का गीता में फरमाते हैं । आप २७, २८ शलोक अध्याय ९ को देखें । अपने सब कर्मों का फल मेरे हवाले करो । फल की इच्छा न रखो । हर कर्म इच्छा

रहित हो। फर्ज समझ कर किया जाये। हर कर्म निष्काम हो। पिछले जन्मों के कर्मो के फल भोग लेने के बाद मुक्ति मिलेगी। अवश्य-मिलेगी और अवश्य मिलेगी।

किये जा अमल और न ढूंढ उसका फल।
अमल कर अमल कर, न हो वे अमल॥

शलोक ४७ अध्याय २,

संत मत केवल मुक्ति दिलाने की शिक्षा देता है। निवृत्ति मार्ग की शिक्षा। सब अध्यात्मिक साधक मुक्ति के इच्छुक हैं लेकिन निवृत्ति मार्ग की पहली शर्त यह है कि जीव को इस संसार से बैराग हो चुका हो। मतलब कि इस संसार की कोई वस्तु, कोई दृष्य और कोई चीज़ जीव को आनन्द न दे। और इस संसार को एक कष्ट समझकर काल के गाल से निकलने की इच्छा रखता हो।

यह करनी मैं आप कराऊं पहुंचाऊं धुर दरवारा।
तुम अचिन्त रह धरो प्यारा।

उन्होने केवल एक शर्त भगवान् कृष्ण जी जैसी लगाई है कि तुम निश्चिन्त हो प्यार करो। जो जीव इस दुनियां में वे फिकर हो गया और प्रभुकी भक्ति

में प्रेम में, डूब गया इस को विदेह मुक्त कहते हैं। विदेह मुक्त आस रहित होकर भक्ति करता है।

किसी फल की इच्छा के बिना भक्ति करता है। अचिन्त रहकर करता है। किसी ने अग्रेजी भाषा में खूब कहा है:-

I sought my soul, but my soul I could not find
I sought my God, but my God alluded me.
I sought my brother and I found all three.

मैं अपनी आत्मा को ढूंढता रहा लेकिन सफल न हो सका। मैंने इश्वर दर्शन के लिए तप किया लेकिन ईश्वर दर्शन न पा सका। मैंने हर जीव से प्रेम ररना शुरु किया। सबको अपना भाई समझने लगा। मुझे अपनी आत्मा के भी दर्शन हो गए और ईश्वर के दर्शन भी हो गए, और प्रेम भक्ति में मस्ती मिलने लगी। प्रेम को कितना ऊंचा दर्जा दिया गया। कहा गया है कि सारी रचना में वह है। हर जीव में प्रभु की किरण है।

है सब जान वालों में, जान बही।
कि फानी में गेर फानी वही ॥

गीता २७ शलोक अध्याय १३ ।

देखिये परम आद सन्त कबीर साहिब जी मुक्ति पाने के लिये यही उपाय बताते हैं ।

दया राख धर्म को पाले. जग से रहे उदासी,
अपना साजोव सबको जाने, ताहै मिले अविनाशी ।
सहे कुशब्द वाद त्यागे, छोड़े गर्ब गुमाना।
सत नाम ताहे को मिले है कहे कबीर सुजाना ।

जब तक इन्सान हर जीव को अपने जैसा नहीं समझता और संसार से उदास रहकर हर एक पर दया नहीं करता, अहंकार का त्याग नहीं करता, उसको सत धाम में विश्राम नहीं मिल सकता ।

सब को राधास्वामी ।

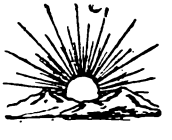

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं० १

प्यारे बच्चे ! राधास्वमी

राखी मिली, साधन पतित करता है। जो पतित नहीं है वह साधन नहीं करेगा। जिन्दगी है। जिन्दगी का वनना ही पतितपना है। जिन्दगी में रहते हुए, जिन्दगी से प्यार न करना ही सच्चा साधन है।

समझ सकते हो तो समझो, नहीं तो कुछ दिनों हवा खाओ। जप करो तप करो, जो मन में आवे सो करो। साधन करो सेवा करो, पूजा करो, दान करो पुण्य करो, ये सब जिन्दगी की पतित अवस्था के ही काम हैं।

आपका

फकीर

पत्र नं० २

प्यारे भाई ! राधास्वामी

ये तेरा सवाल नहीं मेरा अपना सवाल है। मैंने तो इसको ऐसे हल किया पता नहीं मेरा हल ठीक है या नहीं, मगर मुझे उस हल से शान्ति है।

ये दुनियां, तुम देखते हो Space में कितने सूरज, चांद सितारे हैं। क्या कोई अन्त है ? आखिर ये कहीं से तो निकले है। नेस्तो से हस्ती तो हो नहीं सकती। वह जो कुछ भी है, है। क्या है ? मुझे तो कोई पता नहीं लगा। जब ढूंढने जाता हूं तो रास्ते में अनेक सकलें सूरतें, हालतें पैदा होती हैं, चूंकि मुझे यह ज्ञान हो गया है कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मेरा रूप लोगों के काम कर जाता है, दवाइयां बता जाता है, और मैं नहीं होता, तो मुझे यकीन हो गया कि मेरे अन्तर जो कुछ भी होता है अच्छा या बुरा, रूप रंग यह सब कल्पना है माया है, है नहीं। तो फिर वो जो असल चीज़ है जिसमें से यह सब निकलता है, अगर कोई उस अवस्था में जाना चाहे तो उसको इन शकलों, रूपों-रगों विचारों सब की तरफ से अपने आपको हटा लेना चाहिए। जब तक यह ज्ञान नहीं

होता आने जाने का चक्कर खतम नहीं होगा। आना जाना क्या है ? हमारा अपना आप यानी सुरत को अपने से बाहर की तरफ लगाना जन्म लेना है और यहां से हटा लेना मरना है।

अब मुझे यह यकीन हो गया, कि ये जो गुरु ज्ञान मुझे मिला है अगर यह कायम रहा तो शरीर छूटने पर न मैं कभी आऊंगा न जाऊंगा। दरअसल आने जाने वाली चीज़ ही खतम हो जायेगी। हमारा इस तरफ ध्यान देना व ध्यान को हटा देना ही माया है। इसलिए संत कहते है कि :-

साधो कौन आया और कौन गया।

समुन्द्र में ज्वार भाटा आता है। बुलबुले और लहरें वनती हैं और खतम हो जाती हैं समुद्र दायम व कायम है। मुझे इस ख्याल व अनुभव से शान्ति है। दरअसल क्या बात है मैं नहीं समझ सका। अब इस नतीजे पर आता हूं तो सब ये ज्ञान-ध्यान छोड़ कर अपने आप को किसी बड़ी ताकत के सुर्पुद कर देता हूं। शरणागत होता रहता हूं। दाता ने वड़ी दया की मेरे कर्म मिटाने के लिए, गुरु चेले के व्यवहार को दूर करने के लिए, मेरे भ्रम मिटाने के लिए यह काम

दिया था। इस वक्त सिवाये शरणागत के मुझे कहीं और शान्ति नहीं मिलती।

तुम चले चलो, सच्चे होकर चलो, जिस ख्याल में, जिस विचार में जिस सहारे में शान्ति मिलती है वहां ठहरने की कोशिश करो।

आप आप को आप पिछानो, कहा और का नेक न मानो।

बाहर का गुरु भी 'और' में शुमार है। जो बाहर का गुरु तुमको या किसी को अपने साथ वांधे वह गुरु नहीं। गुरु से सम्बन्ध इसलिए किया जाता है कि हम अपनी ज़ात में वापिस चले जायें।

आपका

फकीर

मानवता मंदिर होशियारपुर।
ता. १३-१०-१९७६

कृषक ! कृषक !! प्यारे कृषक !!! राधास्वामी

पत्र मिला पढ़ा, हुआ हर्ष, । अगर मैंने यह मंदिर न बनाया हुआ होता तो मुझे अंतर की कुरीद खतम करने में कोई तकलीफ न होती । आपने जो कुछ लिखा वह सोलह आने सच है। मैं तो ऐ कृषक, आप सत संगियों की बदौलत उस मंज़िल को पागया हूं जिस मंज़िल को शायद ऋषी मुनियों ने भी न पाया हो। मेरा अनुभव सिर्फ एक ख्याल ने कि में किसी के अंदर नहीं जाता मेरी ज़िन्दगी का तख्ता ही बदल दिया, क्या तख्ता बदला ? जब लोगों के अन्तर मेरा नूरानी रुप प्रकट होकर शब्द आदि सुना देता है, तो मैं अपने अन्तर उस चीज़ की तलाश करता हूं या वहीं ठहरना चाहता हूं या उस हालत में रहना चाहता हूं जो शब्द को सुनती है और प्रकाश को देखती है वह दर असल में मेरी ज़ात है। जब वह शै ख़्याल की तरफ संकल्प की तरफ आती है जीव बन जाती है, मन बन जाती है। जब वह प्रकाश को देखती है, आत्मा का रूप बन जाती है, जव वह शब्द को सुनती है

वह सत हो जाती है । अगर उसका शब्द प्रकाश, मन, देह से ताल्लुक न हो तो फिर वह क्या होती है ? सब कुछ और कुछ नहीं ।

मैं आपके साथ सहमत हूं कि जिंदगी में शरीर है, मन है, संसार की या जीने की या इन चीजो में रहने की या खुशी या आनन्द लेने की अभी ख्वाईश बाकी है । इसलिए लिखा था कि मेरी अंदरूनी कुरीद बाकी है । कोशिश करता रहता हूं ।

सुनो कृषक । एक बात कहूं । अगर मैंने आपने जीवन में अपने पेट के लिये काम न किया होता तो उस काम के संस्कार मेरे मस्तिष्क पर न पड़े हुए होते मगर में देखता हूं कि मुझे स्वप्न में, रेल गाढ़ी व स्टेशनों के, बसरे बगदाद के दृष्य आते हैं । मगर मंदिर, मंदिर का कोई काम, आप सतसंगीजन, मेरा व आप लोगों का व्यवहार, खतो किताबत कभी भी मेरे स्वप्न में नहीं आते । कभी स्वप्न में याद रहता है कि यह स्वप्न है और कभी बिल्कुल नहीं । मुझे यह दुःख है लाख कोशीश करने पर भी मेरे से स्वप्न के दृष्य खतम नहीं होते । चूंकि मेरे जिम्मे या मेरे प्रारब्ध कर्मों के कारण दाता दयाल जी ने तालीम बदलने को कहा

शायद यही मेरा प्रारब्ध कर्म बाकी है। कई दफा सोचता हूं कब यह खेल खतम होगा ? पता नहीं। यदि दाता दयाल जी का यह संस्कार न होता तो मैं काम न भी करता। मैं आपसे सहमत हूं कि इस समय मैं जो कुछ करता हूं इसका कोई असर मेरे दिमाग़ पर नहीं है। इस अवस्था में रहने का नाम ही शायद जीवन मुक्ति या विदेह गति हो। हरेक आदमी मेरे ख्याल में इस कुदरत के कानून के ज़ेर असर घसीटा जा रहा है।

मैं कृतघन नहीं हूं। मैंने दातादयालजी की संगत से जो राज़ लिखा है उसे नहीं पा सकता था। यह राज़ मुझको आप सतसंगियों, जिन्होंने मुझे गुरु माना उनसे मिला, इस वास्ते मैं सच्च कहता हूं कि इस उमर में मैं उन सतसंगियों को जिनके अंतर मेरा रूप प्रकट होता है या मेरी कही बात का उन पर असर होता है, उनको दाता दयाल जी का रूप मान कर प्रेम करता हूं उनकी कदर इज़्जत करता हूं, और मर्यादा भंग नहीं करता इसी वास्ते में आपको व दूसरों को अपना प्यारा समझता हूं, व जितनी शक्ति मुझमें

है, आर्थिक, मानसिक व आत्मिक रूप से प्यार करता हूं।

दाता दयाल जी मुझे लिखा करते थे, फकीर, मैं तेरे दर्शन का प्यासा। इसी ख्याल से मैं भीलवाड़ा, दिल्ली या देश विदेश में सतसंगियों के दर्शन करने जाता हूं। आपकी भी इज्ज़त करता हूं। गुरु सेवा ही असली भक्ति है। मालिक तो न मुझसे जुदा था, न जुदा है, न जुदा होगा। जिस तरह से बुलबुला पानी से न जुदा है, न जुदा रह सकता है।

मैंने जो कुछ पाया, दया तो दाता दयालजी की ही है, मगर आप लोगों से पाया है। यह बात स्वामी जी ने कही थी, जब राय सालिग राम साहब के बारे में लोगों ने स्वामी जी से कहा कि आप के शिष्य सालिग राम जी आपके वड़े भक्त व सेवक हैं, तो उन्होने कहा था कि क्या खबर में सालिग राम का गुरु हूं या मेरा गुरु सालिग राम है? मुझमें गुरु बनने का स्वप्न में भी ख्याल नहीं आया। तुम भी ऐसा ही समझो गुरु चेले का व्यवहार है और अज्ञानी व मायाग्रत जीवों के अपने अज्ञान का नतीजा है। जीव अपने आपको बाप, भाई, बेटा, गुरु चेला संत साधू

आदि समझते हैं। दाता ने एक दफा मुझे लिखा था असल में एक तत्व का भान फकीरा! मैं अपने शारीरिक कष्टों को देखकर व दूसरे सन्तों के शारीरिक कष्ट, मान अपमान के हालात को समझकर इस नतीजे पर आया हूं कि कुदरत के राज़ का किसी को पता नहीं लगा न स्वामी जी को न कबीर को या किसी और को।

शरणागत मेरी आखरी मंजिल है, शरणागत होने की जो मेरी चाह है वही मेरी अंतर की कुरीद है जो मिटती नहीं। कृषक! तुम भाग्य शाली हो मालिक की तुम पर दया है कि तुमको इस बुढ़ापे में वह मालिक, वह ताकत तुम्हारे परिवार के रूप में तुम्हारी सेवा करती है। मैं भी भागवान हूं कि इस बूढ़ी उमर में मेरी जीविका का प्रबन्ध मेरा पुत्र या दीगर सतसंगियों की बदोलत पूरा हो रहा है यह उसकी दया है। अगर आज मेरी आर्थिक दशा ठीक न होती तो मेरा ख्याल है शायद यह दशा जो मेरी है वह न होती। इसलिए जीवन के ज़ाति अनुभव के आधार पर मैंने दाता के हुकम से कि तालीम बदल जाना, मनुष्य बनो की आबाज उठाई

जीयो व जीने दो, कमाओ, खाओ व खिलाओ, मदद दो व मदद लो। रह गया पमार्थ यह अज्ञान था मेरा, मैं भ्रभ में था। साधन व अभ्यास से और आप सतसंगियों के सतसंग से मुझे यह अवस्था प्राप्त है। सतसंगी मंदिर में मदद करते हैं, मैं उस पैसे से दुःखियों, यतीमों व गरीबों की मदद करता हूं और उस ज्ञान व अनुभव को जो मैंने हासिल किया है भिन्न भिन्न तरीकों से ज़ाहिर करता रहता हूं। मगर कोई अहंकार नहीं।

कृष्क, किस बात का दावा करूं ? आज दिमाग़ ठीक है। यह मालिक की दया है, कल को बिगड़ जाय तो मेरे बस में क्या है ? जीवन गुज़र रहा है, मैं तो अब शरणागत में गुज़ारता हूं। सब कुछ करता हूं और कुछ नहीं करता। मुझे अफसोस है कि मैं आपके व दीगर सत्संगियों के दर्शन से मैहरूम रहा। मौज मालिक ! खुश रहो !! मेरी सच्चे दिल की वासना है कि आपका अंत समय ठीक गुज़रे। शरीर त्याग के बाद क्या होगा ? Theory थ्यूरी है। ख्वाहिश है, है, क्यूं है ? पता नहीं, शरीर छूटने के बाद मेरी हस्ती कहीं रहे तो मालिक तौफीक दे तो मैं बता सकूं कि

मेरा क्या अंजाम हुआ ? बस शणागतं है । ऐ कृषक ! मैं आपको व दीगर सत्संगियों को सतगुरु रूप समझ कर नमस्कार करता हूं । यदि कोई अधिकारी हो तो यह खत पढ़कर सुना देना । मुझ में कोई तास्सुब व पक्ष अब नहीं रहा । यह में भी मानव मन्दिर में छपवाऊंगा ।

दाता ! आपका एहसान याद आता है । आपने एक बहमी पतित व कामी जीव को छाती से लगाया प्रेम किया, उत्साह दिया, आपने जो हुकम दिया अपने ज़ाती अनुभव के अधार पर मैंने ज़ाहिर किया ।

कृषक ! सोचता हूं मेरे इस काम का फायदा क्या ? अगर यह राज़ किसी को समझ आ जावे तो उसका मज़हवी तास्सुब, मजहबी द्वेष व उसकी कल्पानएं जिससे जीव दुख सुख मानता हैं खतम हो सकती हैं ।

अपका फकीर

कि मुझे पता नहीं होता न मैं कहीं जाता हूं और मेरा रूप लोगों के अन्तर में प्रकट होता है, देश विदेश में लोगों की जागृत व स्वप्न अवस्था में सहायता करता है। जब लोगों से यह बातें सुनता हूं तो मुझे पक्का विश्वास हो गया है कि जो कुछ लोग अंतर में देखते हैं अपने ही मन से देखते हैं। वह प्रकट होने वाला भी उनके संस्कार मन पर पड़े हुऐ प्रभाव का ही परिणाम है। मानसिक प्रभाव या संस्कार के अनुसार ही फुरनाऐं होती हैं। एक आदमी राम, कृष्ण, बुद्ध या मुहम्मद को मानता है, वह मनसे ही मानता है। यह मन तो आप पैदा हुआ हुआ है। हमारी आत्मा जब देह में आती है मन, चित्त, बुद्धी और अहंकार भी आ जाते हैं मन जिसको भी मानेगा वह अपूर्ण ही होगा।

मेरा कर्म

सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट का हिसाब दिखाया, उसने कहा कि आंखों का हस्पताल खुलने के बाद मन्दिर के कुल व्यय के लिए कम से कम 135000/-रुपया की धन राशि प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा कि ऐ फकीर। तू ने यह क्या किया? एक गढ़े से निकला और दूसरे कुऐ में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझको वचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी वह मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति ने मेरी उस तलाश को मिटाने के लिऐ मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब में पंथ में आया था तो मैंने भी प्रण किया था कि अपना

अनुभव संसार को बता जाऊंगा और हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था कि चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने अनुभव किया वह ठीक है या ग़लत। आत्मा सत्य प्रिय है। जो कुछ मैंने गृहस्थि, शिष्य और गुरु होने की स्थिती मैं अनुभव किया वह मुझ को एक ऐसी अवस्था की ओर ले जा रहा है जहां न मैं, न तू. न गुरू, न चेला, न राम, न रहीम और न करीम। मगर अभी तक उस धुर धाम में मैं ठहर नहीं सकता। मालूम नहीं क्यों ? मैं यह कहने में विवश हूं कि या तो मेरे कर्म या इस संसार की रचना करने वाले की इच्छा।

मेरे इस कर्म भोग वश मैंने इन्सान वनो की आवाज़ उठाई। धर्मों और पंथों में जो रोचक और भयानक बातें धर्म और पंथ चलाने के लिए और दुनियां को पीछे लगाने के लिए कही गई, उनको मैंने साफ कर दिया। समझ में आया की जब तक मनुष्य जीवन है वह आपस के प्रेम, सहायता और सेवा के अधीन हैं। अध्यात्मिक जीवन भी नाम, ध्यान प्रकाश और शब्द का अधीन है। इसलिए मैंने मन्दिर में यथा

शक्ति अनाथों, अन्धों और ग़रीब विद्यार्थियों की सहायता करने का काम किया। आर्थिक हीन लोगों के लिये होम्यौपैथिक दांतों और आंखों का हस्पताल खोला। कई जीव भ्रम और शंका ग्रस्त होते है, उन को अपने भविष्य अथवा भाग्य की चिन्ता होती है। इनके लिये ज्योतिष का प्रबन्ध किया। जो सज्जन साधन या अभ्यास करना चाहते हैं उनके लिए भी प्रबन्ध किया। मगर जब डिप्टी सैक्रेटरी ने मन्दिर का हिसाब बताया तो ख्याल आया कि इतना व्यय करना कठिन मालूम होता है। यदि मैं परदा रखता जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनकी सहायता करता है मरते समय ले जाता है और दवाईयें बताता है, भारत वर्ष में ही नहीं विदेशों में भी, तो जितना भी धन चाहता, मान चाहता,ले सकता था। मगर मेरी आत्मा ने नहीं माना।

मानव मन्दिर पत्रिका या अन्य किताबें जो मानवता मन्दिर में छपती हैं मैंने उन का कोई मूल्य नहीं रखा।

बिना मूल्य साहित्य बांटने का कारण मेरा ब्रह्मण के घर का जन्म है। ब्रह्मण के लिए वेद

बेचना पाप है। क्योंकि किताबों में जो कुछ लिखता हूं वह मेरा अनुभव है। इसलिए मैंने इसकी कोई कीमत नहीं रखी। रात सोचा कि माया के चक्कर में तो तू आ गया, अब बता तू क्या करेगा? मेरा निर्णय यह है।

जो सेज्जन मेरे सहित्य को पढ़ते हैं यदि उन की अत्मायें इस बात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें। मन्दिर में एक पैसा की हेरा फेरी नहीं होती है। ट्रस्ट है और विधिवत हिसाब है। जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलायूंगा। अगर न चला तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का हुकम है कि शिक्षा बदल जाना। मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मलिक। दाता दयाल के ऋण से उतीर्ण हो जाऊगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उनसे यह मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि पत्रिका का प्रकाशन बढ़ रहा है। जिन की रुची इस के पढ़ने में न हो वह न मंगवायें।

ऐ मेरी जिन्दगी के बनाने वाले ? मेरे हैपने को बनाने वाले। तेरा प्रेम था। मालूम नहीं मैंने जो कुछ किया अथवा समझा, ठीक है या ग़लत है। मैं शरणागत हूं। जिस रास्ते तेरी मौज है उसी रास्ते से मुझे ले चल। अब उस दिन की प्रतीक्षा करता हूं जब अपनी हस्ती को खोकर उसी परम तत्व में चला जाऊं।

फकीर।

फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट, होशियारपुर द्वारा बिना मूल्य बांटा जाने वाला साहित्य

1. **THE SECRET OF SECRETS**
   Written by His Holiness Pt. Faqir Chand Ji Maharaj.

2. अनुभवसार (हिन्दी) दूसरा प्रकाशन
   लेखक श्री कुबेर नाथ श्रीवास्तव, एडवोकेट, रसड़ा ।

3. मानव मन्दिर (हिन्दी)—मासिक पत्रिका ।

मिलने का पता :—

सैक्रेट्री :
मानवता मन्दिर, होशियारपुर ।

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

P—Hsp—7.

1283.

ADDRESS

To
Sh. A. Hanumanth Rao,
H.No.-10-3-194/8,
Hamayun Nagar,
Hyderabad 28. (A.P.)
500028.

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.